धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

जनवरी 2010

* परम पूजनीय भगवान देवात्मा का
159वां शुभ जन्म महोत्सव

* भाव प्रकाश

जी के उपकार नज़र आए हैं। श्रीमान सुखदेव सिंह जी के प्रति जलन और घृणा पैदा हो गई थी। मेरी भरजाई के प्रति भी घृणा पैदा हो गई थी। मुझे वह घृणा नज़र आई है, क्षमा मांगता हूं। अब उनके साथ अच्छा व्यवहार करूंगा। मेरा छोटा भाई लक्ष्मण जैसा है। मैं अपनी पत्नी के साथ भी अच्छा व्यवहार नहीं करता, जितना करना चाहिए। गुरु की कृपा से यह आत्मिक रोग नज़र आते हैं। गुरुदेव राज जी के उपकारों का भी कर्ज़ा नहीं उतार सकता। मैं अध्ययन किया करूंगा, किसी तरह मेरी घृणा चली जाए।

श्रीमती भरपूर कौन जी :- यहां पर हमारी मैल उतारने की कोशिश की गई है। थोड़े दिनों की बात है कि मैं एक लड़की की सहायता करना चाहती थी। लड़की के लिए एक पार्टी रखकर अपना भला नहीं किया, उल्टा अपना अहं ही बढ़ाया है, मुझे गुस्सा था कि जिस लड़की का रिश्ता मैंने करवाया, उन्होंने मेरे बिना पूछे विवाह रख लिया, मैं गुस्से में उसकी शादी में शामिल नहीं होना चाहती थी, परन्तु अब जरूर शामिल हूंगी। गुस्सा छोड़ूंगी मेरी बड़ी बेटी की ससुराल में प्रशंसा होती है, वह गुरु का ही दान है।

श्रीमान धीमान जी :- बहुत कमियां नजर आई हैं। एक अपना ऐसा कोढ़ नज़र आया है, उसका परिशोध करूंगा। स्वाद अनुराग मेरा विनाश करता है, उससे बचने की प्रेरणा मिली है।

श्रीमान बूटा सिंह जी :- इस सभा में उपकारी नज़र आए हैं। श्रीमान गुरुबख्श सिंह जी के उपकारों का बदला नहीं दे सकता। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी से दूरी हो गई थी। उनकी मेहरबानियों को याद करके अब उस दूरी के लिए दुख होता है। उन्होंने मेरी धर्म पत्नी की जान बचाई। मैं अपनी गल्ती के लिए क्षमा चाहता हूं (श्रीमान जी के पैरों में गिरकर क्षमा मांगी)

श्रीमान तेज राम जी (कल्याण) जितनी कीमत संगत की है, उतना उसका हम सत्कार नहीं करते। मैं संगत में अधिक समय दूंगा। गुरु से जुड़ने की अधिक अवश्यकता अनुभव हुई है।

श्रीमान हुशियार सिंह जी :- मैं तबाह हो रहा हूं। मेरी जिन्दगी खतरे में हैं। डॉ. खेड़ा साहिब की सभा में बहुत भला हुआ है। मैं हितकारियों से दूर हो रहा हूं। मेरी सहायता की जाए।

समय बहुत हो चुका था। इसके बाद भाव प्रकाश बन्द करके सभापति जी ने सब सहायकारी शक्तियों, धर्मशाला के प्रबन्धकों, महोत्सव की तैयारी में सहायक होने वाले जनों और सर्दी में महोत्सव की रौनक बढ़ाने वाले धर्म सम्बन्धियों और श्रद्धावानों, सभा कराने वाले सब धर्म सम्बन्धियों का हार्दिक धन्यवाद किया, इन सब की कृपा से ही यह सारा प्रोग्राम आशाओं से बढ़कर सफल रहा। उसके बाद देव आरती का सामूहिक गान बहुत जोश से भरकर किया गया और चार बार जय ध्वनि करके प्रोग्राम समाप्त हुआ।

सब धर्म सम्बन्धी खाना खाकर अपने अपने स्थानों की ओर प्रस्थान करने लगे, कुछ धर्म सम्बन्धी ने पण्डाल आदि में जो सामान समेटना था, उसमें सहायक हुए।

- मन्त्री देव धर्म

****

धर्म जीवन

खण्ड 22 अंक 1

जनवरी 2010

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 159वां शुभ जन्म महोत्सव

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 159 वाँ शुभ जन्म महोत्सव 1 दिसम्बर से 4 दिसम्बर तक शुभवती धर्मशाला, सैक्टर 18-डी, चण्डीगढ़ में पिछले कई वर्षों की तरह पूरे चाव भाव से मनाया गया। इस शुभ अवसर की सफलता के लिए विशेष तैय्यारियाँ की गईं। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने सब स्थानों का अपने साथियों के साथ दौरा किया। सेवकों और श्रद्धावानों को इस शुभ अवसर पर पहुँचने की प्रेरणा दी। बहुत से पत्र इस मकसद के लिए लिखे गए। हित स्रोत और धर्म जीवन के विशेष अंक निकाले गए। इनके द्वारा भी महोत्सव का शुभ संवाद पहुँचाया गया। सैंकड़ों सुन्दर निमन्त्रण पत्र छपवाकर अधिकारी जनों को पोस्ट किए गए।

महोत्सव की सभाओं के प्रोग्राम के लिए इस साल पहले की तरह पंडाल बनाया गया। उसके लिए तरपाल डाली गई। पंडाल को अन्दर से बर्फ नुमा सफेद चादरों से खूब सजाया गया। बिजली के सुन्दर फानूसनुमा शैण्डलियर लटकाए गए। गुरु महाराज का नया बहुत बड़े साईज का फोटा और माटोज़ सजाए गए। उच्च आत्माओं की फोटोज़ पण्डाल के दोनों ओर सजाई गई। हाल को जगदीश जी, विनय जी बी. एड. कालिज की छात्राओं की सहायता लेकर सजाया। हाल को पौधों और गमलों से भी सजाया गया। झण्डे लगाकर और बड़ा विजय पताका लगाकर सेहन और ईर्द-गिर्द के स्थान को सुसज्जित किया गया। जगदीश जी के साथ और प्रदीप जी ने भी बहुत सहायता की। बैंड आदि का प्रबन्ध किया गया। धर्मशाला के कमरे बहुत साफ सुथरे और सफेदी आदि किए गए। इस पावन अवसर पर पंजाब, हरियाणा, दिल्ली आदि स्थानों से यात्री पहुँचे। कल्याण, भुच्चो मण्डी, चण्डीगढ़, मोहाली, पंचकूला, दड़वा, बलटाना, राएपुर खुर्द, दिल्ली, मेरठ, खतौली, मंडवाड़ी, लुधियाना, जींद, अम्बाला, केसूपुरा, मलेका, कुआंखेड़ा, ढाणी मौजदीन, बनी, मानसा, डेरा बस्सी, फिरोज़पुर, देहरादून, गज सिंह पुरा, पदमपुर, राएपुर रानी, मुज्जफर नगर, लखनऊ, गोनियाना मण्डी, महिमा सवाई, थराजवाला, मोगा, समराला, संगरूर, जंडवाला, गुजरात, बन्नी, बंगा,

कुंआखेड़ा, डबवाली, योल (धर्मशाला) आदि स्थानों से यात्री आए।

लोकल हिन्दी वा अंग्रेजी अखबारों में महोत्सव के प्रोग्राम का हाल छपता रहा। यात्रियों के स्नान आदि के लिए गर्म पानी का भरपूर प्रबन्ध था। यह सेवा श्रीमान सीता राम जी और बूटा सिंह जी खुशी-खुशी करते रहे। घण्टा बजाने का काम श्रीमान ओम प्रकाश जी वर्मा जी करते रहे। पुस्तकों के स्टाल पर भी वर्मा जी आदि सेवा करते रहे। दफ्तर का काम श्री जगदीश जी, उनके बेटे विनय जी और दत्ता जी करते रहे। भजनों का गान जगदीश जी पयूष जी भल्ला और दत्ता जी करते रहे। 2 तारीख की रात को डॉ. पयूष जी भल्ला और उनकी पार्टी ने सुन्दर भजनों का गान करके समय बांध दिया। जगदीष जी, आदर्श जी, गुरुदेव राज जी और केसूपुरा की दो लड़कियों ने भी भजनों का गान किया। हारों आदि का प्रबन्ध श्री जगदीश जी वा विनय जी ने किया। गैसों आदि का प्रबन्ध भी किया गया।

गुरुदेव राज जी ने सुबह के कीर्तन में अपनी पार्टी के साथ बहुत जोश से भजन गाए। बच्चों की सभा, श्रीमती सुरजीत जी बराड़ और सरोज जी कुक्कड़ ने सम्भाली। आने वाले जनों की संख्या 300 से भी अधिक थी। विशेष दिन पर चण्डीगढ़ कोचिंग सैंटर के लगभग 350 लड़के, लड़कियाँ आए, उन्होंने भजनों आदि में भाग भी लिया और शाम का लैक्चर बहुत ही संजीदगी से सुना और प्रश्नों के उत्तर भी दिए।

खाने का प्रबन्ध अच्छा रहा। सब पूरी तरह से सन्तुष्ट रहे। इस सारे प्रोग्राम के लिए गुरु महाराज और सहायकारी शक्तियों को जितना भी धन्यवाद दिया जाए, कम है।

महोत्सव की सब सभाओं में ही बहुत अच्छा देव प्रभाव दायक मण्डल बनता रहा। सभाओं का संक्षिप्त हाल इस प्रकार है :-

1.12.2009, मंगलवार – शाम 4.30 बजे

प्रवेश सभा : सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

पहला भजन :– श्रीमान जगदीष प्रसाद जी और सुनील जी दत्त ने "हमारे पूजनीय सत्गुरु, जी तुम हो धन्य" खूब जोश से भरकर गाया। पूजनीय देव स्त्रोत के गान के बाद व्याख्या की, फिर सभापति जी ने भाव विभोर होकर महा उत्सव की सफलता के लिए सहाय प्रार्थना की।

सभापति जी ने अपना ब्यान आरम्भ करते हुए बताया कि दुनियां के धर्मो के मुकाबले में हम बहुत कम संख्या में हैं। परन्तु गिणती से किसी अवसर की महानता कम नहीं होती। इस उत्सव की महानता भिन्न है। यहां जो हित की गंगा बहेगी, उसके साथ हमें इसकी महानता समझ में आएगी। किसी कुम्भ या हज पर लाखों लोग इकट्ठे होते हैं, परन्तु कोई अपने हित या शुभ की प्रेरणा लेकर नहीं आता। यह द्वार हित का द्वार है (हरिद्वार नहीं) यहां हित होता है, जैसे रजिन्द्र जी देहरादून वालों का हुआ है, उनका पाप जीवन गया है।

एक गांव में एक सरदार के पुत्र और पुत्रवधु का कत्ल हुआ है, उस भयानक घटना का ब्यान किया। भटिंडा में दो सगे भाई थे। एक के दो लड़कियां थी, दूसरे के घर लड़का पैदा हुआ। ईर्षा वश चाचा ने और उसकी पत्नी जो चाची वा मासी

भी थी मिलकर बच्चे को एक तलाब में ले जाकर डूबो दिया। बधनी कला की एक विवाहित लड़की थी। वह अपने मायके अपने बच्चे समेत आई हुई थी। लड़की का पिता नशे का बन्धुआ था। उसने नशे के लिए बेटी और दामाद से पैसे मांगे, वह पैसे न दे सके, वह इतना दरिंदा बन गया कि अपने नाती को ही मार दिया। दिल को हिला देने वाली ऐसी घटनाओं से प्रतिदिन अखबार भरे होते हैं। बरनाला से संगरूर जाते हुए पुत्र ने पिता को आंखों में लाल मिर्चें डालकर उसे नहर में धक्का देकर मार दिया।

हमारा देश धार्मिक देश है, वेदों और ग्रन्थों का देश है, परन्तु आत्मिक अन्धों का देश है। आत्मिक अन्धेपन को मिटाने के लिए यह दर मौजूद है। यह हमारा महा सौभाग्य है कि यहां निराली ज्योति और तेज का दान मिलता है। ऐसे दर पर पहुंचना आपका महा सौभाग्य है।

फिर डाक्टर पयूष जी भल्ला की पार्टी ने "सेवको और श्रद्धावनों, गुरु के प्यारो स्वागतम" नाम के भजन का अपनी मधुर आवाज़ में गान किया।

सभापति जी ने आने वाले यात्रियों का भावपूर्ण शब्दों में स्वागत किया। बार-बार उन लोगों को धन्यवाद देते हुए मुबारकबाद दी।

आगे सभापति जी ने फरमाया कि 159 वें शुभ जन्म महोत्सव की यह प्रवेश सभा है। महोत्सव की सभाओं से लाभ उठाने के लिए दिलों को तैयार करने के लिए यह सभा है।

इन सभाओं में वचित्र देव ज्योति का वितरण होगा, जो हमें अपना आप देखने के लिए मजबूर करती है।

इन सभाओं में ही श्री जगदीष जी को यह नज़र आया कि शराब, मांसाहार, जुआ मुझे मार देगा। उनका जीवन पापों की आग में जल रहा था। उन्हें इस स्थान की और यहां से मिलने वाले प्रभावों की कीमत नज़र आई और उस पाप अग्नि से सदा के लिए रक्षा प्राप्त कर ली।

श्रीमान जागीर सिंह जी का पहले श्रीमान जी को छुरा मारने को मन करता था, फिर सदा के लिए इस दर के कायल हो गए। अब इस मिशन में सेवाकारी बनते रहते हैं।

पॉप के बादशाह माईकल जैक्सन संसार भर में शोहरत पाकर, करोड़ों रू० में खेले, परन्तु कंगाल होकर, जीवन बर्बाद करके चले गए। उनके शरीर से केवल नशे की गोलियां निकली, खुराक खा ही नहीं सकता था।

"पंजाब के प्रसिद्ध कवि बटालवी तो स्वयं पुकारा करते थे" असीं जौबन दे रुते मरना"

नीच सुख अनुरागों की, सारे देश क्या सारे विश्व को आग लगी हुई है। धार्मिक स्थानों में जुबान के द्वारा पूजा पाठ हो रहे हैं, कुंभों और हज्जों का ज़ोर है, परन्तु हमारा महा सौभाग्य कि हमें अद्वितीय आर्विभाव का पता लग गया, उनकी अद्वितीय शरण प्राप्त हो गई।

मधुकोडा, झारखण्ड के मंत्री पद पर रहते हुए 4000 करोड़ रू० के घोटाले में फंसे हुए हैं। उनके साथी कमलेश कुमार जेल में है। उन्होंने दुख वा विनाश के नियम पूरे किए है। मैं दोस्त की बहन की शादी में गया। वहां भूत बन गया। शराब छिड़क छिड़क कर नाचा। गुरु के अमृत ने नशों से बचा

लिया। फिर उसी भूत को उसी घर से निमन्त्रण आया कि आपने हमारी शादी में अवश्य आना है, पहले घर वाले मेरे दोस्त से लड़े थे कि इस भूत को क्यों लेकर आए।

हमने अपना सारा ज़ोर लगाना है कि सभाओं से पूरा लाभ उठाएं। उसके नियम हैं, जो पूरे करने हैं।

यह दर सर्वोच्च दर है। यहां सभाओं में प्रार्थना करके बैठना है। समय पर आना है। प्रार्थना से दिल का लोहा गर्म करके आना है।

एकाकारी की पगड़ी वा दुपट्टा लेकर आना है। जिस चीज का निरादर करो, वह जल्दी जल्दी नहीं मिलती। महोत्सव की सफलता के लिए भी गहरी प्रार्थना करो :-

बुराई वा निन्दा चुगली से बचना बेहद जरूरी है। हृदय को सरस और अधिकारी बनाने के लिए गुण चिन्तन वा उपकार स्मरण करना अवश्यक है। यहां जो अमृत मिलता है, वह हमारे हृदयों को बदलता है। इस दर के देव प्रभावों की महिमा मैं गा नहीं सकता। गुरु महाराज के प्रभाव जलवे पैदा करते हैं।

यदि थोड़े समय के लिए हमें प्रधान मंत्री बना दे और उसके बाद कतल कर दे, तो ऐसे पद का क्या लाभ। हमारा जीवन सबसे अमुल्य है, उसको बचाने के लिए रूह की होश प्राप्त करने की अवश्यकता है।

एक-एक धन का अनुरागी क्या खेल खेलता है। एक बाप ने अपनी बेटी की शादी इसलिए नहीं की कि रुपये खर्च होंगे। वह अब 75 वर्ष की हो गई है। अपने छोटे बेटों की शादी में स्वयं उसने घोड़ी जोड़ी, मोटर साईकल आदि सब कुछ ले लिया।

मनुष्य नीच सुखों के बन्धनों में जकड़ा हुआ है। वह उन सुखों का दास हो जाता है, वह अपने नीच सुख का ही हो जाता है, किसी सम्बन्धी का नहीं रहता। गालिब साहिब नशे के ही होकर रह गए और किसी के नहीं रहे।

यहां आकर नई होश मिलती है। यहां आकर एक स्वार्थी बहन को अपनी बड़ी बहन के उपकार नज़र आए हैं। अपनी कृतघ्नता नज़र आई। बहन से जाकर क्षमा मांगी, और उससे सेवा का अवसर पाकर खुशी प्राप्त की और अपना सौभाग्य अनुभव किया।

एक नौजवान को अपना आप नज़र आया और उसने ब्यान किया कि उसने एक ऐसी घृणित करतूत की थी कि वह किसी को मुंह दिखाने के भी लायक नहीं रहा था। उसने अपने पिता और अन्य सम्बन्धियों के पैरों में गिरकर क्षमा प्रार्थना की। अब पिता कहते हैं कि अब वह श्रवण कुमार बन गया है। इस दर की महिमा नज़र आने लगी है, अब वह सब सभाओं से लाभ उठाता है।

हमारी नीच घृणा और बदले की गतियां हृदय को पत्थर बना देती हैं। जब रोशनी मिलती है, तब नज़र आती हैं।

कहां नशई और बदमाश नेता ब्राह्मण, जिससे गांव वासी डरते थे, अपने दरवाजे बन्द कर लेते थे, कहां इस दर के प्रभावों ने उन्हें ऋषि बना दिया और गांव की लड़कियों को उनके साथ भेजना ग्रामवासी सुरक्षित अनुभव करने लगे।

सभापति जी ने अपना ब्यान बहुत सुन्दर

ढंग से किया, और हाजरीन को प्रभावित किया।

सभा के बाद श्री सैक्रटरी साहिब ने सब यात्रियों का स्वागत किया। यात्री अच्छी संख्या में पहुंच गए थे। जरुरी डियूटीयां वा सूचनाएं पढ़ी। अगले दिन का प्रोग्राम बताया। इस प्रकार यह बहुत प्रभावशाली सभा समाप्त हुई। चार बार जय ध्वनि के साथ यह सभा समाप्त हुई।

2.12.2009, दिन बुधवार

सभापति - श्रीमान बलदेव सिंह जी,

समय - 8.30 बजे सुबह

भजन :- "हे सत्य शिव सुन्दर व्रतधारी," नामक भजन जगदीष जी ने बहुत ही भावपूर्ण लहजे में गाया।

उसके बाद सभापपि जी ने हृदय गत भावों से सहाय प्रार्थना की फिर उस दिन के विषय "परम पूजनीय भगवान देवात्मा का परम अवश्यक जीवन दायक सम्बन्ध" पर श्रीमान जी ने फरमाया :-

देवात्मा के देव जीवन का सम्बन्ध हमारे लिए परम अवश्यक है, Optional नहीं है। सब मनुष्यात्माओं के लिए ही परम अवश्यक है। मनुष्य होना बहुत बड़ा सौभाग्य है। बहुत कीमती privilage है। मनुष्य ने बहुत लासानी उपलब्धियां की हैं, यह जीवन एक rare opportunity होने के बावजूद भी, मनुष्य को इसकी सफलता का ज्ञान नहीं और बोध नहीं, चाहे मनुष्य किसी भी धर्म को मानता हो। देवात्मा का सेवक होकर मनुष्य मोटे पापों से तो बच जाता है, मिथ्या से बच जाता है, परन्तु पाप शक्तियां उसके भीतर वर्तमान रहती हैं। धन, मान, बड़ाई आदि के लिए, सेहत के लिए, विद्या प्राप्ति के लिए जीवन बसर हो रहे हैं। अबांनी भाई सबसे अमीर आदमी हैं, पर धन के लिए विवाद जारी है, धन, Glamour, Fashion के लिए जीवन बर्बाद हो रहे हैं। शंकराचार्य पर कतल के मुकदमें चल रहे हैं। कई और बड़े उपदेशकों पर कतल वा बलात्कार के मुकदमें चल रहे हैं। धर्म के सूर्य नई रोशनी वा नई सचाईयां लेकर आए हैं। मनुष्य जीवन की सफलता आत्म बोध प्राप्त करने में है। आत्म ज्ञान और आत्म कल्याण ही मनुष्य जीवन का लक्ष्य है। जीवन की सफलता (1) रूह का ज्ञान पाना (2) आत्मा की मोक्ष (3) आत्मा के विकास में है।

शरीर के लिए हवा, पानी और खुराक, औषधियां परम अवश्यक हैं और आत्मा के लिए देव प्रभाव परम अवश्यक हैं, जिनमें आत्मा की सोझी प्राप्त होती है। श्री कृष्ण जी ने गीता में लिखा है कि आत्मा अमर है, देवात्मा ने फरमाया है कि आत्मा गठन प्राप्त जीवित वजूद है जो हमारे रोम रोम में बसता है। वही शक्तियां हमारी परिचालक शक्तियां हैं। इस ज्ञान के बिना मनुष्य पशु समान है। सरदार रतन सिंह जी ने श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी को कहा था कि यदि आप देव समाज में न आते तो कितने बड़े अफसर होते, तो उन्होंने फरमाया था कि यह तो वही बात है कि यदि मैं ऊंट होता तो कितना बड़ा ऊंट होता।

कनल जी फरमाते हैं कि इन्सान ज्वालामुखी पहाड़ के मुंह पर बैठा है, परन्तु उसे इसका ज्ञान नहीं। दुखों से बचने और उचित सुख प्राप्ति के लिए भी अपने परिचालक भावों को जानना अवश्यक है। सुख अनुराग ही मनुष्य के परिचालक हैं। मोह, मिथ्या और पाप में फंसाते हैं। सारा संसार सुख अनुरागों की तृप्ति में मस्त है। सिकन्दर बहुत बड़ा

विजेता था, पर अपने आपको फतह नहीं कर सका। अरस्तु सिकन्दर महान के अध्यापिक थे। परन्तु आत्मा अन्धकार के कारण उन्होंने आत्मघात कर लिया। टालसटाय और रसकिन गांधी जी के गुरु थे। War and Peace के रचियता टालसटाय दुखी होकर बर्फानी रात में रेलवे स्टेशन पर चले गए और वहीं मृत्यु को प्राप्त हुए। घर का विवाद सहन नहीं कर सके।

मनुष्य के पास ऐसी समर्थ्य नहीं कि वह स्वयं अपनी शक्तियों को देख सके। Angiography बिना दिल की बिमारी का ठीक मात्रा में पता नहीं लगता। Biopsy बिना कैंसर का ज्ञान नहीं हो सकता।

जीवन की सफलता के लिए दूसरा पड़ाव है पाप शक्तियों से मोक्ष पाना। एक करोड़पति कहता है कि न मैं अच्छा खा सकता हूं, न अच्छा पहन सकता हूं। उसकी कंजूसी उसे अपने पर भी खर्च नहीं करने देती थी। सुख अनुराग बड़ा अनर्थ करते हैं। ईसा, मुहम्मद, जैनगुरु, बुद्ध, नानक, राजा राम मोहन राए महान पुरुष थे। महात्मा गांधी बहुत महान थे, पर वह कहते थे कि मैं पंडित नहरु की सिगरेट नहीं छुड़वा सका।

देवात्मा हित अनुरागी हैं, सच्चाई के अनुरागी हैं। हित अनुराग और सच्चाई के पूर्णांग प्रेम की देव शक्तियों से विभूषित है। देवात्मा के देवरुप की समझ भी देवात्मा की रोशनी में ही आ सकती है।

डॉ. सिरी राम जी शाकाहारी थे। धन अनुराग इतना था कि गुरू से भी आशीर्वाद के रूप में 5000 रू० धन के रू० में ही मांगे। परन्तु गुरु की ज्योति पाकर पुराने समय में 20, 22 हजार दान कर दिए।

सब मनुष्य अपनी भलाई के कातिल हैं। ईद पर खून की नदियां बहाई गई हैं। बरनार्ड शाह फरमाते हैं कि निर्दोषों का खून बहाकर शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती। स्त्री जाति पर जुल्म हो रहे हैं, बलात्कार हो रहे हैं। निठारी कांड हो रहे हैं। तंदूर में डालकर पत्नी को जलाया जाता है। कितने धर्म पैदा हो जाएँ, कितने गुरु आ जाए, जब तक मनुष्य को उसकी पाप शक्तियां दिखाने वाला नहीं मिलता, तब तक महा अनर्थ और जहन्नुम जारी रहेगा।

प्रेम जी बन्नी से आए हैं, वह कहते थे कि माता पिता को अधिक से अधिक दुखी करना है, सताना है। इन्सान अपने नीच सुख अनुरागों के दास होकर अपना और अपनों का दुश्मन बन जाता है। श्रीमान नौध सिंह जी, श्रीमान नेतराम जी, श्रीमान सुरजन सिंह जी, पाप सागर में डूब रहे थे। देव शक्ति ने कमाल क्रिश्मे दिखाए हैं। हमारा वास पाप सागर में है। हम सांपों से खेल रहे हैं। परलोक वासी श्रीमान निर्मल सिंह जी मेरे महान उपकारी हैं। वह फरिश्ता बनकर आए। श्रीमान वरियाम सिंह जी कब्बर बच्छा वालों को बचाया। नेतराम जी बचाए, बचन सिंह जी थराजवाला को बदला। घर में मन्दिर बनवाया। पाप का शत्रु ही पाप शक्तियों से बचा सकता है। झूठ का शत्रु ही मिथ्या से बचा सकता है। हमारे ऊपर (1) अंह का अधिकार है (2) गुस्से से हम पागल हैं (3) हम स्वार्थ के कैदी हैं (4) धन का बन्धन है (5) मोह का बन्धन है।

देवात्मा की आद्वितीय देव ज्योति के बिना मनुष्य अपने अन्दर की पाप शक्तियों को भयानक

और हानिकारक और प्रकृत रूप में नहीं देख सकता। सारे का सारा मनुष्य जगत इस देव ज्योति का मोहताज है। यह ज्योति परम अवश्यक है।

मनुष्य अपने आप अपनी किसी भी पाप शक्ति से मुक्ति नहीं पा सकता। पाप शक्तियों से मुक्ति के लिए देवात्मा के देव तेज का सारा मनुष्य जगत मोहताज है। देवात्मा ही केवल मात्र पाप के शत्रु प्रगट हुए हैं।

मनुष्य अपने आप अपने अन्दर कोई उच्च शक्ति, विकासकारी शक्ति भी नहीं पैदा कर सकता, इसलिए भी देव तेज की अवश्यकता है। देव तेज का मोहताज है।

उक्त देव ज्योति और देव तेज की प्राप्ति देवात्मा के सम्बन्ध के बिना प्राप्त होनी असम्भव है। इसलिए मनुष्य मात्र के लिए देवात्मा का सम्बन्ध परम अवश्यक है और जीवन दायक है।

उच्च लोकवासी श्रीमान निर्मल सिंह जी के परिवर्तन में देवात्मा के देव प्रभावों का कार्य स्पष्ट दिखाई दे रहा था। इस सारे ब्यान से हाजरीन बहुत प्रभावित हो रहे थे और गुरु महाराज के चरणों में झुक रहे थे।

अपने प्रभावशाली ब्यान के अन्त में सभापति जी ने भाव विभोर होकर "एक सत्यदेव बिना, मेरा है न कोई" नामक भजन गाकर सभा को समाप्त किया।

यह सभा लगभग 11.00 बजे तक जारी रही।

2.12.2009

पब्लिक लैक्चर :- 4.00 बजे शाम सभापति श्री यशपाल जी भल्ला।

लैक्चरर :- श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

विषय :- परमात्मा, आत्मा और देवात्मा

पहले एक भजन जगदीष जी ने गाया, "अहोभाग्य! सत्गुरु तुम्हें मैंने पाया" फिर डॉ. पयूष जी भल्ला और पार्टी ने, "निराले सत्गुरु पाकर यह दिल उनको भुलाए क्यों" नामक भजन का गान किया।

पहले सभापति जी ने कुछ शब्दों में आरम्भिक ब्यान किया। फिर सुयोग्य वक्ता ने अपना ब्यान आरम्भ करते हुए कहा कि लैक्चर के तीन शब्द हैं परमात्मा आत्मा और देवात्मा। इसकी गहराई को प्रगट करने के लिए मुझे अपनी अयोग्यता का पूरा एहसास है। हम जिस दुनियां में रहते हैं, वहां परमात्मा को मानना परम्परा है, जो सदियों से चली आ रही है। ईश्वर की अराधना होती है, प्रार्थना होती है, उसका धन्यवाद किया जाता है, उससे दूध, पुत्र, धन, सेहत आदि मांगने की प्रार्थनाएं की जाती हैं।

मेरे एक साथी ने जिसका कोई बच्चा नहीं था, विज्ञान की सहायता से बच्चा पैदा किया, परमात्मा का इसमें कोई हाथ नहीं था। इकबाल ने कहा है :-

"मस्जिद तो बना ली शब भर में, यह मन तो पुराना पापी है, वर्षो से नमाजी बन न सका"

विश्व में जो कुछ भी है वह मैटर व एनर्जी ही है। इस विश्व का कोई बनाने वाला वा सृष्टा नहीं।

जो गुण परमात्मा में माने जाते हैं कि वह सर्वव्यापी है, सर्वशक्तिमान है, सर्वज्ञानी हैं, पूर्ण रहस्यमय है, यह कहीं भी सिद्ध नहीं होते। गुरु

नानक ने ईश्वर को प्रश्न करके पुकारा था, जब बाबर ने हमला करके खून बहाया था, "ऐसी मार पई कुरलाने, की तैं दर्द न आया"

यहां परमात्मा के गुण टकराते हैं, वह सर्व शक्तिमान भी नहीं, सर्वदयालु भी नहीं।

जब सुनामी की लहर आई थी, तो मन्दिर, गिरजे सब सब गिर गए, पशु पक्षी मर गए। ईश्वर होता तो यह जुल्म न होता।

सारी मानवता धर्म के अडम्बरों में फंसी जा रही है, परन्तु कर्म शर्मिन्दा करने वाले हैं। एक विख्यात धर्म स्थान पर ईश्वर के अराधक के कारण उसकी पुत्रवधु की लाश एक तालाब में तैरती हुई मिली, जिस कारण उसे मुखिया के पद से हटना पड़ा।

Nothingness को ही ईश्वर बताया जाता है। फिर लैक्चर साहिबान ने कहा कि मेरे शब्दों से किसी को ठेस लग सकती है। मैं क्षमा चाहता हूं, परन्तु इस डर से मैं अपने विषय से विचलित नहीं हो सकता।

यदि हम पिता जी, पिता जी का जाप तो करते रहें, तो उससे पिता जी को कोई लाभ नहीं। उनकी सेवा से ही कुछ लाभ हो सकता है।

आत्मा को परमात्मा का अंश बताया जाता यह बिल्कुल गल्त है। परमात्मा तो है नहीं, तो फिर आत्मा भी नहीं है।

कृष्ण जी ने गीता में उपदेश दिया है कि आत्मा ऐसी वस्तु है कि जिसको न मारा जा सकता है, न डुबोया जा सकता है, न हवा इसे सुखा सकती है, यह अमर है, अजर है, निर्लेप है।

सन् 1894 में गुरु महाराज के हृदय में एक द्वंद पैदा हो गया। ईश्वर है या नहीं। वर्ष भर गुरु महाराज बहुत कशमकश में रहे। परन्तु वह एक भ्रम ही सिद्ध हुआ।

आत्मा महान, सैंटरल Consciousness का नाम है। आत्मा को माया समझना मिथ्या है। यह संसार मिथ्या नहीं, सत्य है। आत्मा के सम्बन्ध में अन्धकार है और रहेगा, जब तक आत्मा को दर्शाने वाली ज्योति नहीं मिलती। देवात्मा ने उसी बात को सत्य माना है, जो सांईस ने सत्य माना है।

पौधों की जीवनी शक्ति को प्राण, पशुओं की जीवनी शक्ति को जीव, मनुष्य की जीवनी शक्ति को आत्मा कहा जाता है। आत्मा भौतिक जगत से निकल कर पौधों, पशुओं में विकसित होते हुए मनुष्य की जीवनी शक्ति में विकसित हुई है। वही आत्मा है।

धर्म को लेकर जो भी शिक्षा है, वह मनुष्य को उसके ख़ौफनाक शत्रुओं के लिए जाग्रति नहीं देती, सुचेत नहीं करती।

मेरी आत्मा की एक ही भयानक परिचालक शक्ति को गुरु महाराज की ज्योति ने मेरे ऊपर भयानक रूप में रोशन करके मेरा अथाह भला किया है।

जीवनी शक्ति मनुष्य के रोम-रोम में वास करती है। इसी कारण Tissue Culture का तरीका बना है। कलोनिंग होती है। आत्मा के सम्बन्ध में भगवान देवात्मा ने बहुत बड़ी और महान सचाईयों को प्रगट किया है। आत्मा नेचर का ही अंश है। नेचर के सब नियम उस पर काम करते हैं। वह परिवर्तन के नियम के अधीन है। उसका भी विनाश और विकास होता है।

देवात्मा के विषय में "हमने तुमको नहीं पहचाना" अर्थात नहीं जाना वाली बात हम पर पूरी तरह ठीक उतरती है। मनुष्य होकर देवात्मा का पहचान करना आसान बात नहीं।

देवात्मा रूहानी रोशनी के दाता हैं, रूहानी शक्ति के दाता हैं। नीचता को गारत करते हैं, सम्बन्धों में स्वर्गीय मेल उत्पन्न करते हैं। उजड़े घरों को बसाते हैं, जो कोई और गुरु पीर नहीं कर सका और नहीं कर सकता।

हम मनुष्यात्माओं ने तो कनल जी को नहीं पहचाना, श्रद्धेय पी. वी. कनल जी को, श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी को नहीं पहचाना। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी को नहीं पहचाना।

देवात्मा सत्गुरु ने मुर्दा धर्म में नई जान डाल दी है। धर्म को वैज्ञानिक आधार दे दिया।

सब धर्मो में ही जलजले आते हैं। झगड़े होते हैं। श्रद्धेय जी ने कहा था "सूखे टुकड़े खाएंगे, देव राज फैलाएंगे" इसी आधार पर उन्होंने अपना जीवन निस्सार कर दिया। परन्तु कुछ लोग विरोधी बन गए। गुरु को छोड़कर चले गए। कुछ और जनों को भी साथ ले गए। भगवान ने मुआफी नामा लिखने का हुक्म दिया। देवात्मा को पहचानना बहुत कठिन है। इसके लिए हमें मान्सिक तौर पर और आत्मिक तौर पर बहुत ऊंचा उठना होगा। भगवान की शक्तियां अद्वितीय हैं, लक्ष्य अद्वितीय है, शिक्षा अद्वितीय है और कारज अद्वितीय है।

देवात्मा के अद्वितीय देव रूप से प्रभाव निकलते हैं, जो ज्योति और शक्ति निकली है, वह हमें बदलती है।

सरदार हरनाम सिंह जी राजों महाराजों के रिश्तेदार, लड़कियों को जन्म लेते ही मारने वाले, नौकरों को मार मारकर भगाने वाले, नौकर से क्षमा की फरियाद करने के लिए मजबूर हो गए, क्षमा प्राप्त करके ही तृप्ति पाई। मुआफ करने वाला भी रो उठा।

एक टीचर ने घड़ी दबाने का परिशोध करके अपना पाप धोया। उस घटना का मर्म स्पर्शी ब्यान किया। परिशोध द्वारा कैसे उन्होंने अपना हृदय धोया। गांव में जाकर क्षमा मांगी। देवात्मा अद्भुत नज़ारे पैदा करते हैं।

मैं अपने ही मां बाप को तुच्छ देखता, शर्मिदा महसूस करता था। रब को कोसता कि ऐसे माता पिता के घर क्यों पैदा किया, जो शराब नहीं पीते। कितना अन्धा था!

जब भगवान की ज्योति मुझे मिली, सद्गुणों और उपकारों की दुनियां नजर आई तो मुझे वह फरिश्ते नज़र आने लगे। मैं पाक गर्व से फूला नहीं समाता।

एक दयावान पिता, श्रद्धावान ऋषि पिता, परोपकारी पिता का अंश होकर मुझे बड़ा सौभाग्य अनुभव होता है। देवात्मा हार्दिक आंखों के सर्जन है। उन्होंने मेरा अप्रेशन कर दिया। इस प्रकार बहुत ही प्रभावशाली, जोश से पूर्ण ब्यान उन्होंने समाप्त किया। हाजरीन धन्य-धन्य हो रहे थे और गुरु के आगे झुक रहे थे।

सभापति जी ने भी लैक्चर के तीनों विषयों के वर्णन की सराहना की और मुबारकबाद दी कि कोई भी जन लैक्चर में से उठकर नहीं गया।

भगवान ने फरमाया है कि मुझे अपना एक-एक तत्व जितना प्यारा है, उसका लाखवां

भाग भी किसी को नज़र नहीं आता। आत्मा परिवर्तनशील है। उच्च परिवर्तन का काम ही धर्म का काम है। उच्च परिवर्तन शक्तियों द्वारा होता है। ईश्वर का विश्वास मिथ्या ही नहीं बल्कि महा खौफ़नाक है। भगवान देवात्मा के सामने नेचर के नियम पूरी तरह खुल गए। उन्होंने सदा सत्य और शुभ का साथ दिया।

भगवान फरमाते हैं कि मैं विकास तत्व दर्शी होकर निराश नहीं हो सकता, समय के साथ-साथ आदमी अवश्य आएंगे। आज तक एक भी भरोसे के योगय जन नहीं मिल सका।

देवात्मा का मिशन, उनका कारज Unique है। चार बार जय ध्वनि करके इस शानदार लैक्चर की समाप्ति हुई। हाजरीन के साथ हाल भरा हुआ था, सब पाक उत्साह अनुभव कर रहे थे।

संगीत सभा

2.12.2009, 7.30 बजे शाम :- इस सभा में धर्म सम्बन्धियों ने भाव विभोर होकर भजन गाए। श्रीमान जगदीष प्रसाद जी कुक्कड़, डॉ. पयूष जी भल्ला और उनके साथियों ने शानदार भावों से भरकर भजनों का गान किया।

मौंटू सिंह जी, गुरुदेवराज जी श्री ओम प्रकाश जी आदर्श और 2 लड़कियों ने भी मिलकर भजन गाए। साजों और अवाजों का मिश्रण बहुत सुन्दर वातावरण प्रदान कर रहा था। श्रद्धा का भाव जाग्रित हो रहा था।

कल्याण सत्संग

हर वर्ष की तरह कल्याण सत्संग इस वर्ष भी 4 फरवरी 2010 की रात्रि से आरम्भ होकर 7 फरवरी ईतवार को सम्पन्न होगा। पाठकगण! कृपा करके यह तिथियां नोट कर लें।

निवेदन है कि इस शुभ अवसर से लाभ उठाने के लिए आप भी अवश्य पधारो और सम्भवत: अपने साथ और अधिकारी जनों को भी लाने की कृपा करो।

आपके ठहरने और सादा भोजन आदि का प्रबन्ध स्थानीय सेवक करने की खुशी प्राप्त करेंगे।

प्रार्थी

बलदेव सिंह, मंत्री

महोत्सव का विशेष दिन

3.12.2009, सुबह 6.00 बजे :- सामूहिक भजनों का गान आरम्भ हुआ। भगवान देवात्मा की जय के नारे बुलन्द किए गए। सेहन में खड़े होकर गुरुदेवराज जी और साथियों ने बहुत श्रद्धा और जोश से भरकर भजन गाए। सूर्य के निकलते ही जय जयकार के साथ बैंड बाजा बजने लगा। "प्रगटे देवगुरु भगवान, जीवन ज्योति देने वाले" भजन की तान छेड़ दी गई और उसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने ऊंचे स्थान पर खड़े होकर इस दिन की सबको मुबारकबाद दी और सारे मनुष्य मात्र के सौभाग्य का वर्णन किया। फिर बैंड बजने लगा और हर वर्ष की तरह डा. मुंशा सिंह और अन्य साथी उसकी धुन के साथ नाचने लगे और इस प्रकार अपने हर्ष का प्रकाश किया। धर्म सम्बन्धियों और अन्य यात्रियों ने फूलों के हारों द्वारा गुरु महाराज का अर्चन किया और एक दूसरे को बधाई दी।

8.30 बजे, महा सभा :-

सभापति : श्रीमान यशपाल जी भल्ला।

देव स्तोत्र का गान वा व्याख्या की गई। फिर सभापति जी ने फरमाया कि आज उस देवात्मा गुरु का शुभ जन्म दिन है, जो हमारे तारणहारे हैं। मैं इस महान दिन पर आप सबको मुबारकबाद देता हूं।

भजन - पयूष जी भल्ला ने "आए देवात्मा रूहों को बचाने के लिए" नामक भजन का गान किया।

फिर सभापति जी ने बताया कि देवात्मा फरमाते हैं कि "हम नेचर में रूहानी जगत के बादशाह हैं, यह ताज नेचर ने हमारे सिर पर रखा है।"

श्रद्धेय कनल जी फरमाया करते थे :-

"हे सत्गुरु आपकी वर्तमानता में सारी कायनात नजर आती है" श्री हरनारायण जी अग्निहोत्री फरमाया करते थे :-

मेरी तसल्ली आपको पूर्णांग धर्मावतार पुकार कर नहीं होती। सत्गुरु की महिमा इतनी महान है कि उसका वर्णन कौन कर सकता है? "मुझमें देव जीवन का विकास" समय से बहुत पहले लिखे जाने के कारण उसकी कदर की सम्भावना नहीं।

पुराने समय में दो धारणाएं मुख्य थी, एक तो कोई काम न करो, इससे आवागमन में भटकना पड़ता है, दूसरी यह कि कोई सम्बन्ध न रखो, क्योंकि सम्बन्धों में दुख मिलता है। परन्तु पूजनीय भगवान ने मनुष्य जीवन का विकास वा विनाश सम्बन्धों में ही बताया है।

महायज्ञ के पहले दिन ही मैंने यह प्रार्थना की कि हे सत्गुरु। आपका बल मिल सके ताकि इन दिनों को मैं सफल कर सकूं। देवात्मा ने फरमाया था :- "महायज्ञ का एक सप्ताह बीत गया, क्या आपका दिल धोया गया?" काले, मैले हृदय पर रंग नहीं चढ़ता। इस महीने को सफल करने का यत्न किया। प्रार्थना और पाठ का सिलसिला चलता रहा।

मुझे अपनी अयोग्यता का कुछ पता है। कनल जी ने लिखा है कि "हम अपनी अयोग्यता को खूब जानते हैं। शुभ को दर्शाना कितना कठिन है, यह हमने कुछ-कुछ जाना है।

हमारा सौभाग्य हैं कि हम देव जीवन की कथा को सुनाएं। श्री अकबरपुर को याद करके, ध्यान धर कर प्रणाम करें। गुरु महाराज ने रूड़की से पढ़ाई ख़त्म की। लहौर में जीवन व्रत की घोषणा की। पापों में विनष्ट होने वाला मनुष्य सदा विकसित होने वाले देवात्मा को कैसे पहचानेगा।

राजा राम मोहन राए जी ने धर्मो का अध्ययन किया। पूजनीय भगवान ने भी पहले ब्रह्मों समाज को ग्रहण किया। पूजनीय भगवान हैरान थे कि लोग धर्मों को भी मानते हैं, और पाप भी करते हैं। यह दृश्य मुझसे सहन नहीं हो सकता।

1882 को 32 वर्ष की भरी जवानी में जीवन व्रत ग्रहण किया। उस समय पांच बहुत उच्च कोटि के आत्मा भगवान देवात्मा के पास थे। सरदार जमीयत सिंह जी, श्रीमान भाई अमर सिंह जी, श्री भाई मंगल देव जी, स्वामी गोबिन्द राम जी, श्रद्धेय कुमारी प्रेम देवी जी।

15 जनवरी के लैक्चर का ब्यान किया, फिर वही भजन पढ़कर सुनाया "अभी बचो तुम, अभी बचो जी, गुनाह अलूदा छोड़ जिन्दगी नई जिन्दगी पाओ जी।

धर्म की जंग में देवात्मा अकेले थे। दूसरी तरफ बहुत बड़ी विरोधता का सागर था। गुरु महाराज ने फरमाया था कि मैंने सारी दुनियां के साथ जंग शुरु कर दिया है। सारी दुनियां एक तरफ और मैं अकेला। धर्म राज लाने के लिए उन्होंने फरमाया था :-

"याद रखो, मैं तुमसे ही आदमी लूंगी, और तुम्हारे ही बुराई और पाप के किलों पर हमला करूंगा, आखिर में फतह मेरी ही होगी।"

पूजनीय भगवान ने लिखा है कि पहले 10 वर्षो में मैं 20 रातें भी आराम से नहीं सोया हूंगा। सेहित चकनाचूर हो गई। इन्हीं 4 वर्षो में, 1882 में "विलाप" नामक लेख लिखा था, जिसमें पूजनीय भगवान ने आकाश और धरती को साक्षी बनाकर पुकार की थी। पूजनीय भगवान फरमाते थे, मेरा मिशन और मैं अलग अलग नहीं हैं।

धीरे-धीरे प्रतिकूल घटनाओं के साथ-साथ अनुकूल घटनाएं भी पैदा होनी शुरु हो गई। उन सबका वर्णन किया गया। पूजनीय भगवान के विरुद्ध हुई विराट सभा का ब्यान किया और उसके जवाब में पूजनीय भगवान ने सभा रखी, परन्तु विरोधियों ने इस कदर हल्ला मचाया कि पूजनीय भगवान को बड़ी कठिनाई से वहां से सुरक्षित निकाला गया। तीन दिन तक पूजनीय भगवान प्राय: मूर्छित अवस्था में रहे।

फिर मुकदमों का दौर शुरू हुआ। चन्दा सिंह, देव रत्न, और कितने जनों ने झूठे मुकदमें दायर किए, परन्तु आखिर फतह सत्य और शुभ की हुई।

इसी कठिन दौर में पूजनीय भगवान ने सच्चे धर्म की खोज जारी रखी। प्रश्न उठने लगे

प्रश्न:- धर्म क्या है?

उतर:- धर्म आत्मा में उच्च परिवर्तन का नाम है।

प्रश्न:- क्या आत्मा निर्लेप है?

उत्तर:- नहीं आत्मा परिवर्तनशील है।

प्रश्न: - नेचर के अटल नियमों का आत्मा के साथ क्या सम्बन्ध है?

उत्तर: - आत्मा नेचर के अटल नियमों के अधीन है।

प्रश्न: - क्या धर्म की शिक्षा अलग - अलग लोगों के लिए अलग - अलग हो सकती है?

उत्तर: - सब मनुष्यों के लिए धर्म की एक ही शिक्षा है, जो नेचर के अटल नियमों के अनुसार और विज्ञान मूलक हो।

1905 ई० में धर्म विकासालय की स्थापना की। देव धर्म की बुनियाद विज्ञान पर रखी। 1920 में मनुष्यात्मा के सम्बन्ध में चार महा तत्व नामक पुस्तक लिखी। 1926 में पहला पूजनीय देव शास्त्र और 1927 में दूसरा देवशास्त्र निकाला। उसके बाद सभापति जी ने श्री बजरंग बिहारी जी, श्री पी. वी. कनल जी, श्री एस. पी. करल जी, श्री चन्दूलाल जी पटवारी जी के परिवर्तनों को बताया और अपनी लिखित एक कविता का पाठ किया।

यह सभा बहुत ही प्रभावशाली थी और हाजरीन बहुत प्रभावित हुए।

धन और जन की अपील :- श्रीमान बलदेव सिंह जी ने फरमाया कि यह मिशन रूहों को बचाने और दुखों को मिटाने का है, इसमें काम आने वालों की बेहद जरूरत है। दुनियादारी छोड़कर दूसरों को बचाने का काम सबसे हितकर काम है। कुछ लोगों ने सत्संगों में जाने का वायदा किया।

श्रीमान सीता राम जी ने कहा - जहा भी सत्संग होगा, वहां अवश्य जाऊंगा।

एक जन ने शराब छोड़ने और दो जनों ने शराब वा बीड़ी छोड़ने का वायदा किया। एक सिद्धू नौजवान ने शराब छोड़ी। एक जन ने एक महीने के लिए शराब छोड़ने का वायदा किया।

दान :- (500 या इससे अधिक देने वालों के नाम)

1. श्रीमान बलदेव सिंह जी और परिवार की तरफ से 2000 डॉलर लगभग 1,00000/-
2. डॉ. नम्रता बराड़ (पुत्री श्रीमान बलदेव सिंह जी) 10,000/-
3. डॉ. विनोद जी खेड़ा 15,000/-
4. डॉ. पयूष जी भल्ला, बहन रोज़ी और भाई (भल्ला साहिब के बच्चे) 15,000/-
5. श्रीमान यशपाल जी भल्ला 10,000/-
6. श्री एस. एन. बाली जी 2400/-
7. ब्रेगेडियर जगबीर सिंह सिद्ध 2280/-
8. श्रीमान जगजीत सिंह जी लुधियाना 1000/-
9. श्रीमान सुभाष जी अग्रवाल 1100/-
10. श्रीमान विनोद जी डोगरा (धर्मशाला) 500/-
11. श्रीमान सत्यवान जी योल 500/-
12. श्रीमान तेज सिंह जी थराजवाला 500/-
13. श्रीमान तेज राम जी कल्याण 500/-
14. श्रीमान प्रेम जी बन्नी 500/-
15. श्री सरल जी गिल 500/-
16. श्रीमान जसविन्द्र सिंह जी भुल्लर 500/-
17. श्रीमान मधुसूदन जी (दड़वा) चण्डीगढ़ 500/-
18. श्रीमान डॉ. आर. के. बांसल 500/-
19. प्रिंसीपल सतिन्द्र ढिल्लों 500/-

12, 13000 रू० के लगभग और दान प्राप्त हुआ। इसके बाद चार बार जय ध्वनि के साथ सभा समाप्त हुई।

दोपहर 1.30 बजे बच्चों की सभा।

इस सभा का संचालन प्रिंसीपल श्रीमती सुरजीत बराड़ जी ने किया। सरोज जी कुक्कड़ ने उनकी सहायता की। 20 के लगभग छोटे छोटे बच्चों ने इसमें भाग लिया।

कुछ देर विराम के बाद संगीत सभा का आयोजन किया गया, जिसमें खेड़ा साहिब के कोचिंग सैंटर के बच्चों ने कुछ भजन गाए, बहुत मधुर स्वरों में उन्होंने बहुत तैयारी के साथ यह कार्यक्रम पेश किया।

फिर पयूष जी भल्ला और उनके साथियों ने अपनी मधुर स्वर ताल में जोश से भरकर भजनों का गान किया। सारा पण्डाल भरा हुआ था और परम पूजनीय भगवान देवात्मा की महिमा से गूंज रहा था। बहुत ही प्रभावदायक प्रोग्राम रहा।

इससे आगे का प्रोग्राम, डा॰ विनोद जी खेड़ा का लैक्चर और सेवकों की सभा का हाल अगले अंक में दिया जाएगा।

शोक समाचार

बहुत शोक कि बहुत पुराने देव समाजी घराने से सम्बन्धित बीबी करतार कौर जी फेरुशहर का नवम्बर के शुरू में निधन हो गया है। वह देव समाज के प्रति बहुत श्रद्धा और निकटता महसूस करती थी। वह जवानी में ही विधवा हो गई थी। उन्होंने भारतीय नारियों की तरह बहुत नेक जीवन व्यतीत किया। वह 94-95 वर्ष की थी। अच्छा स्वस्थ्य जीवन पाया। वह अपने पीछे एक डाक्टर बेटी (बीबी सरबजीत कौर) और उनका परिवार छोड़ गई हैं।

इनके परिवार का अपने ही गृह में चलाया हुआ कन्याओं का स्कूल अभी तक चल रहा है और फल फूल रहा है। वह स्वयं भी इस स्कूल के सम्बन्ध में चिन्तित रहती थी।

ऐसी नेक और श्रद्धावान साथी सेविका के चले जाने पर हम दिली शोक का प्रकाश करते हैं। उनकी पुत्री और परिवार के साथ हमदर्दी प्रगट करते हैं। परलोक में उनके अच्छे आत्मा के लिए ठीक समान और सम्बन्धी प्राप्त होने और उनके आत्मा को शान्ति मिलने की कामना करते हैं।

बलदेव सिंह, मन्त्री

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

भाव प्रकाश

सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी।

श्रीमान जगजीत सिंह जी (लुधियाना) काफी समय से हसरत थी कि जो अब तक लाभ हुआ है, उसका ब्यान करूं। गुरु महाराज के जन्म दिन की बेहद खुशी हुई है। श्रीमान जी के कहने से प्रवेश सभा से एक घण्टा पहले आ गया। 4 साल से मैं पूरा महोत्सव सुनने का सौभाग्य पा रहा हूं और बहुत लाभ हुआ है। जीवन में बहुत अच्छा परिवर्तन आया है। सम्बन्धों में विशेष रुप से बेहतरी आई है और आ रही है। बहुत सम्मान के योग्य भल्ला जी बहुत संग्राम करके सभाएं करवाकर लुधियाना में हमारा बहुत भला करते हैं। श्रीमान मुल्ख राज जी ने मुझे बहुत मेहनत करके समाज से जोड़ा था। यह याद करके उनका एहसान याद करता हूं। उनके परिवार में जाकर कुछ अमली सेवा करने की कोशिश भी की है। आत्म कथा का पाठ करके महाराज जी के दुख हिलाते रहे हैं। श्रद्धेय पंडित परमेश्वर दत्त जी, डाक्टर हरनाम सिंह जी के जीवन पाठ किए हैं, इनसे भी बहुत प्रभावित होता रहा हूं। समाज में आने से पहले मैं क्या था, गल्त दोस्तों और रिश्तेदारों के साथ बुराईयों में बहकर बर्बाद होता था। उन सबसे निकलकर नई दुनियां में प्रवेश हुआ है। और भी गुरु के literature का अध्ययन करूंगा और उसका सम्मान करूंगा। चन्द दिन पहले हमारी रिश्तेदारी में एक बच्ची को बच्चा होने वाला था, उसके परिवार ने कोई ध्यान नहीं दिया। मेरी पत्नी ने कहा कि ऐसी अवस्था में बच्ची का ध्यान न देने से दूसरे जितने भी धर्म कर्म हैं, वह फजूल दिखाई देते हैं, तो खुद जाकर हस्पताल में उसकी Delivery कराई, उसको सम्भाला, उसकी सेवा की और Discharge होने में सहायता करके फिर महोत्सव पर पहुंचे।

गुरु महाराज ने नई दृष्टि दी हैं, लुधिआना में तीन मकान बदले हैं, मैं तीनों को ही प्रणाम करता हूँ। अपनी कमजोरियां देखने की तरफ ध्यान जाने लगा है। दूसरों के गुण स्मरण करने की कोशिश करता हूं। अपना कारोबार 80 प्रतिशत बेटे को सम्भाल दिया है। वह बड़ी इज्ज़त और सम्मान से इजाज़त देता है, किसी प्रकार रुकावट नहीं बनता। चारों जगतों से जो उपकार पाता हूं, स्मरण करता हूं। 1½ साल से गुरु महाराज जी की छवि को, फिर दादा जी, दादी जी और नाना जी को प्रणाम करके फिर मुंह में कुछ डालता हूं। धर्म पत्नी जी के सम्बन्ध में सारा व्यवहार बदला है। उनकी सेवा और उपकार नज़र आते हैं, बेहद धन्यवाद देता हूँ। किसी के घर तकलीफ होती है, तो वह उनकी सहायक बनना चाहती हैं। अपनी माता जी के लिए बहुत श्रद्धा रखती हैं, उनसे जो रुपये उन्हें मिले हैं, उन्हें किसी भले काम में लगाऊंगा। गुरु महाराज के ग्रन्थों के लिए बहुत सम्मान बढ़ा है, इनका अध्ययन करूंगा, और भी सन्मान दूंगा। श्रीमान जी, सेवा की प्रेरणा करते रहते हैं। मैं भी कुछ सेवाकारी होना चाहता हूं। गुरु का और अधिक दान मिल सके और अपने जीवन को कुछ

और लाभकारी बना सकूं।

आपका ब्यान हृदय के गहरे भावों से था और अच्छे असर डाल रहा था।

श्री B. Bhandari (Advocate) : हमारा देव समाज से बहुत पुराना सम्बन्ध है। दादा जी और पिता जी सब ने देव समाज से बहुत लाभ उठाया है। इस बार मुझे बहुत लाभ हुआ है। अपनी पाप की क्रियाएं नज़र आई हैं। दूसरों की गल्तियां देखता हूं, जबकि उनके उपकार बहुत हैं वह देखने हैं। मेरे भाई ने मेरी बहुत सेवाएं की हैं, वह पिता समान हैं। मेरे पिता जी ने, मेरी पत्नी ने बहुत सेवाएं की हैं। खेड़ा साहिब का बहुत उपकार है। भगवान के उपकार नज़र आए हैं। भगवान की जीत सचाई से हुई है। सब देखकर कमाल महसूस हुआ है। अपनी नीच गतियां नज़र आई है, उनसे बचने की इच्छा तीव्र हुई है।

गगन बराड़ (मोगा) : मेरी 20 वर्ष पुरानी सहेली है, उसने बताया कि मेरा अमरीका के वीज़ा के लिए interview आया है। इससे मुझे बहुत बुरा लगा, क्योंकि मेरा अभी तक ऐसा कुछ हुआ नहीं था। मेरे अन्दर गुस्सा पैदा हुआ कि उसने मुझे Interview के दिन ही बताया, जबकि हम हर बात एक दूसरे को बताती थी। मैंने उसका फोन तक attend नहीं किया। यहां आकर मुझे नज़र आया है कि वास्तव में मेरे अन्दर अपनी बहुत पुरानी सहेली के लिए ईर्ष्या पैदा हो गई थी और मैं उससे घृणा करती रही, फिर सहेली ने जाते वक्त बताया कि प्रार्थना करो मुझे visa मिल जाए। (भरे दिल से) मुझे यह नीचता बहुत महसूस हुई है, मैं अब उसके पास जाऊंगी और उसकी सफलता के लिए मुबारकबाद दूंगी और नीचता के लिए क्षमा मांगूगी।

श्रीमान यशपाल जी भल्ला :- मोगा विकासालय में लहौर लाईब्रेरी की सफाई करते समय मुझे पुराना रिकॉर्ड मिला, वह इजाज़त लेकर रिकॉर्ड ले लिया, वह पढ़ा, बेहद लाभ हुआ। महाराज जी की सभाओं का पाठ किया, श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी, भाई अमर सिंह जी और कुछ जनों ने रो-रो कर और पीट पीट कर अपनी हीनता पर दुख प्रगट किया। महाराज फरमाते थे कि दूसरों को शायद श्रीमान देवत्व सिंह जी बहुत ज्यादा खराब नज़र आते थे, जबकि वह अपना आप देखते थे, दूसरों को कुछ दिखाई नहीं देता था, वह तमाशा देखने वाले थे।

हर घटना अमृत बांटती है। जिन्दगी और मौत रोशनी और अन्धेरा, प्रभावों का मिलना और न मिलना एक चीज़ नहीं। जब तक भगवान के साथ सम्बन्ध नहीं होता, तब तक अपने जीवन की असल शक्ल नजर नहीं आती। महा यज्ञ के दिन मुझे नया जन्म दे गए। मुझे इतनी नीच गतियां नज़र आई, लग रहा है कि मैं सारी जिन्दगी लगा रहूं तो भी मैं परिशोध नहीं कर सकूंगा। जिन्दगी का क्या भरोसा है। जिनके सम्बन्ध में मैंने अपराध किए हैं, उनसे मोबाईल करके और कुछ Function करके मुआफी मांगूगा, तब तसल्ली होगी। गुरु महाराज की रोशनी मिली, नीच गतियां नज़र आई हैं और अब परिशोध करना है। जिसको नीच गतियां नज़र नहीं आई, उसे कोई लाभ नहीं हुआ। हम गुरु से जुड़ें, साधन करें, उसकी बहुत जरुरत है, नहीं तो रक्षा नहीं है। "मुझ में देव जीवन का विकास" पढ़ा, अद्वितीय त्याग और देव शास्त्र सब रोशनी से भरे हुए

हैं। अलोचना करने के स्थान पर सही यही है कि महोत्सव से चन्द दिन पहले मुझे बुला लिया जाए, जो कामियां होंगी मिलकर दूर करेंगे। भजनों की एक C.D. तैयार करके release करेंगे। लुधियाना में हमारे पास बड़े अच्छे कमरे और बड़ा सुन्दर हाल मौजूद है, वहां बड़ा सत्संग करेंगे और बहुतों का भला होगा। गुरु शिक्षा को Internet पर पहुंचाया जाए, इसमें हमारे परिवार से सहायता ली जाए। मेरा श्रद्धा सन्मान खेड़ा साहिब के लिए बहुत बड़ा है। वह मिशन के लिए, जो सेवा हो, मेरे से लें। मेरा परिवार मुझे आग्रह करता है कि गुरु मिशन को फैलाओ, सभाएं कराओ। श्रीमान नौध सिंह जी की साधन अलमारी, फोटो और ग्रंथ देखकर, उनकी गहरी श्रद्धा का पता लगा। मैं कई घण्टे साधन करता हूं। यहां पर महोत्सव मनाया गया, सभाएं हुई देव स्तोत्र का गान होता रहा, सब बहुत अच्छा लगा, विशेष तौर पर धन्यवाद करता हूं।

मोनिका भंडारी :- मुझे अफसोस है कि मैं इसी सभा में ही आ सकी हूं। इसका मुझे खेद है। मैंने समाज से पहली बार यह सीखा है कि पहले माता पिता के बारे में सोचो, मेरी माता जी का स्वास्थ्य ठीक नहीं था, इसलिए मैं नहीं आ सकी।

बचपन से ही मैं समाज से जुड़ी हुई हूं, यह समाज मानव जीवन को एक नई शक्ति देता है। दानव को भी यहां के प्रभाव मानव बना देते हैं। मैं यह प्रण करती हूं कि मैं अपने माता पिता के ऊपर क्रोध नहीं करूंगी, जिससे उनके आत्मा को कष्ट पहुंचे।

नायब सिंह जी (समराला) गुरु महाराज के प्रभावों से ही मेरे भीतर थोड़ा बहुत परिवर्तन आया है, सब सभाएं बहुत प्रभावपूर्ण थी। खेड़ा साहिब का लैक्चर दिल को छूने वाला था, बच्चों पर भी इसका अच्छा प्रभाव पड़ा होगा। मेरा दिल चाहता था कि मेरे दोनों बच्चे भी इस सभा में शामिल होते। मुझमें अधिक बोलने की योग्यता नहीं, क्षमा करना, धन्यवाद।

वीरपाल कौर (समराला) बहुत सत्कार योग्य श्रीमान जी, सबसे पहले मैं आपकी बहुत धन्यवादी हूं, जो आप हमारा इतना ध्यान रखते हो। हम मोटे मोटे पापों से तो बचे हैं, फिर भी बहुत पाप वा गल्तियां हो जाती हैं। यहां आकर मुझे अपनी बहुत गल्तियां नज़र आई है। गुरु महाराज की कृपा से इन गल्तियों को सुधारने का यत्न करूंगी। बहुत बड़ी गल्ती जो इस सभा में बैठ कर मुझे तंग कर रही थी, वह यह कि मेरे पास एक लड़की किराए पर रहती थी, छोटी सी गल्ती पर मैंने उसे थप्पड़ मार दिया। उसका कसूर इतना नहीं था, मैंने उसे ज्यादा दुख पहुंचाया। वह नौकरी पर है, मैं उसका पता करके, उससे क्षमा मांग कर आऊंगी, तब तक मुझे चैन नहीं मिलेगा। मैं यह भी कामना करती हूं कि मैं अपनी नौकरी में, और अन्य लोगों को भी कोई कष्ट न पहुंचाऊं। मैं आलस्य त्याग करके सेहत बेहतर करूंगी। कुछ अपने आत्मा से सुधार की ओर भी ध्यान गया है।

श्रीमान जगीर सिंह जी :- जब मैं गुरु की पुस्तकों से दूर हो जाता हूं तो अन्धा हो जाता हूं। ईर्ष्या का भाव कब्जा कर लेता है। मैं जलने लग जाता हूं। लड़की के भाव प्रकाश से रोशनी मिली है। बहुत रक्षा हो रही है। गुरु महाराज के उपकार, माता पिता के उपकार और सुखदेव सिंह

WPP - Regd. Postal No.Pb (0077) 2006 **Published on 5th of the month**
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88 20 जनवरी - 2010

पाठ और विचार विषयक वार्षिक साधनों की तालिका
(2010)

1.	माता पिता और संतान के सम्बंध में	3 जनवरी रविवार
2.	भाई बहनों के सम्बंध में	20 जनवरी बुधवार
3.	देव समाज के सम्बंध में	7, 8 फरवरी रविवार, सोमवार
4.	पति पत्नि के सम्बंध में	28 फरवरी रविवार
5.	उद्‌भिद् जगत् के सम्बंध में	16 मार्च मंगलवार
6.	भृत्य स्वामी के सम्बंध में	30 मार्च, मंगलवार
7.	वंशीय जनों के सम्बंध में	26 मई बुधवार
8.	स्वदेश के सम्बंध में	22 जून मंगलवार
9.	साथी सेवकों के सम्बंध में	24, 25 जुलाई शनिवार, इतवार
10.	स्वास्तित्व के सम्बंध में	23, 24 अगस्त सोमवार, मंगलवार
11.	पशु जगत के सम्बंध में	15 सितम्बर, बुधवार
12.	परलोक के सम्बंध में	7 अक्तूबर, वीरवार
13.	स्वजाति के सम्बंध में	17 अक्तूबर, इतवार
14.	भौतिक जगत के सम्बंध में	5 नवम्बर, शुक्रवार
15.	मनुष्य मात्र के सम्बंध में	21 नवम्बर, इतवार
16.	परम पूजनीय भगवान देवात्मा के सबंध में	20, 21, 22, 23 दिसम्बर सोमवार, मंगलवार, बुधवार, वीरवार विशेष दिन 22 दिसम्बर बुधवार

नोट : 1. परम पूजनीय भगवान देवात्मा का शुभ जन्मदिन 22 दिसम्बर 2010 ई. बुधवार।

2. साधनों के जो जो विशेष दिन किसी हिन्दू त्यौहार के दिन नियत किए गए हैं, वह साधन विविध स्थानों में उसी दिन में किए जावें कि जिस दिन वह त्योहार मनाया जाये।

पाठकों को नया साल बहुत बहुत मुबारक हो ।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर*

म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts